

● देखो, पढ़ो और समझो :

७. आए कहाँ से अक्षर ?



आज संसार में लगभग
४०० (चार सौ)
विभिन्न लिपियों का
उपयोग होता है ।

परंतु यह
कैसे संभव
हुआ होगा ?

अरे वाह !
तरह-तरह
के अक्षर !

हाँ बच्चो, मानव का
बहुमुखी विकास वाणी को
लिपिबद्ध करने की कला
के कारण हुआ है ।

अक्षरों की खोज के
सिलसिले को शुरू
हुए लगभग छह
हजार वर्ष हुए
हैं !

में अक्षरों से बनी,
हम पुस्तकें अक्षरों
से बनी हैं। 'लिपि' ऐसे
प्रतीक चिहनों का
संयोजन है जिनके
द्वारा सभी भाषाओं
को दृष्टिगोचर बनाया
जाता है ।

बिल्कुल सही !
मानव की सबसे बड़ी
उपलब्धि है लेखन
कला !

हमारी इतिहास की
शिक्षिका कहती हैं कि
मानव के महान
आविष्कारों में लिपि का
स्थान सर्वोपरि है ।

तो क्या, अक्षरों की
खोज के साथ एक
नए युग की शुरुआत
हुई होगी ?

□ विद्यार्थियों से इस चित्रकथा का वाचन कराएँ। संवाद के आशय से संबंधित कथा प्रश्नोत्तर द्वारा समझाएँ। विद्यार्थियों में कथा के पात्रों का विभाजन कर संवाद की प्रस्तुति कराएँ।

संस्कृत साहित्य
की देवनागरी
लिपि भारत की
प्राचीनतम लिपि
है।



भाषा का आधार
ध्वनि है।



प्रागैतिहासिक मानव
ने सबसे पहले चित्रों
के जरिए अपने भाव
व्यक्त किए।



आज हम जान गए हैं
कि लिपियाँ मानव
की महानतम कृतियों
में से एक है।



भारत में
लगभग छठी
शताब्दी ई. पू.
अस्तित्व में आई
ब्राह्मी लिपि ने
भी बहुत-सी
लिपियों को
जन्म दिया है।



आज हमें इस बात का गर्व
है कि अक्षरों से ही परिचित
होकर हम आधुनिक
प्रगतिशील जगत की ओर
अग्रसर हैं।



हाँ, हाँ मैं तो आधुनिक तंत्रज्ञान
की ही देन हूँ!

(सभी बच्चों ने-खुश होकर तालियाँ बजाईं
और संगणक कक्ष की ओर दौड़ पड़े।)